इकाई-5

नाजीवाद

यूरोप में दो महायुद्धों के बीच महत्वपूर्ण राजनैतिक परिवर्तन आए जिनमें सबसे विनाशकारी परिवर्तन तानाशाहों का उत्कर्ष था। इटली में बेनिटो मुसोलनी के नेतृत्व में फासीवाद तथा एडोल्फ हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी में नाजीवाद का उत्कर्ष ऐसे ही दो उदाहरण हैं। नाजीवाद एक आक्रामक विचारधारा थी जिसमें राष्ट्र की सर्वोपरिता को सबसे महत्वपूर्ण माना गया। व्यक्तिगत स्वतंत्रता को राज्य हित के आगे त्यागने और अर्थव्यवस्था पर राज्य के पूर्ण नियंत्रण की बात कही गई एवं जर्मनी के विरुद्ध हुए अन्याय का बदला लेने और जर्मनी के सम्मान और गौरव को पुनर्स्थापित करने के उपाए किए गए। हिटलर के उत्कर्ष और उसके नेतृत्व में नात्सी क्रांति के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं :–

1. गणतंत्र की स्थापना :

प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) में जर्मनी की पराजय से उत्पन्न अनियंत्रित स्थिति को संभालने में शासक कैसर विलियम द्वितीय असमर्थ था। अतः प्रतिकूल स्थिति पाकर उन्होंने त्यागपत्र दे दिया और 10 नवम्बर, 1918 ई० को हॉलैण्ड भाग गया। ऐसी अवस्था में समाजवादी प्रजातांत्रिक दल ने सत्ता अपने हाथ में लेकर एकतंत्र के स्थान पर जर्मनी में गणतंत्र की स्थापना की और अपने नेता फ्रेडरिक एबर्ट को चांसलर बनाया। 11 नवम्बर, 1918 ई० को इस नई सरकार ने युद्ध विराम संधि पर हस्ताक्षर कर दिया। इसके बाद संविधान सभा का चुनाव हुआ तथा इसकी प्रथम बैठक 5 फरवरी, 1919 ई० को वाइमर नामक स्थान पर हुई इसलिए यह संविधान वाइमर संविधान या वाइमर गणतंत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह संविधान 10 अगस्त 1919 ई० को लागू हुआ। वाइमर संविधान के अनुसार जर्मनी में संघीय शासन व्यवस्था की स्थापना की गई तथा राष्ट्रपति को आपातकालीन शक्तियाँ प्रदान की गई।

जर्मनी की तात्कालिक स्थिति

1. गणतंत्र की स्थापना
2. वर्साय की अपमानजनक संधि
3. आर्थिक संकट
4. क्षतिपूर्ति की कठोर शर्तें
5. साम्यवाद का बढ़ता खतरा

भारतीय संविधान में राष्ट्रपति के आपातकालीन शक्ति का स्रोत वाइमर संविधान से ही माना जाता है। परन्तु नया वाइमर गणतंत्र युद्धोपरांत जर्मनी की स्थिति संभालने में असफल रहा फलतः जनता में काफी आक्रोश था।

2. वर्साय की अपमानजनक संधि :

प्रथम विश्व युद्ध के बाद 28 जून, 1919 ई० में जर्मनी की नई गणतंत्र को अपमानजनक वर्साय संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया गया। वस्तुतः यह संधि काफी कठोर एवं आरोपित थी।

इस संधि द्वारा जर्मनी का अंग भंग कर दिया गया। आल्सेस लॉरेन का क्षेत्र फ्रांस को लौटा दिया गयां तथा जर्मन क्षेत्र में स्थित 'सार' नामक कोयले की खान को 15 वर्षों के लिए फ्रांस को दे दी गई और उस क्षेत्र का शासन राष्ट्रसंघ को सौंप दिया गया। राइन नदी घाटी के क्षेत्र को सेना रहित करने का निर्णय किया गया। सैनिक दृष्टिकोण से भी जर्मनी को पंगु बना दिया गया जो जर्मनी जैसे स्वाभिमानी राष्ट्र के लिए उचित नहीं था। इस प्रकार वर्साय संधि से उत्पन्न असंतोष का भरपूर फायदा हिटलर ने उठाया।

3. आर्थिक संकट :

इस समय जर्मन गणतंत्र के सामने भीषण समस्या आर्थिक संकट की थी। युद्ध में जर्मनी की काफी वित्तीय क्षति हुई थी। युद्धोपरांत अनेक कल-कारखाने बन्द हो गये और बेरोजगारी की समस्या चरम पर पहुँच गई। आर्थिक दृष्टि से खास्ताहाल जर्मनी पर वर्साय-संधि द्वारा क्षतिपूर्ति की एक बहुत बड़ी राशि लाद दी गई। इस समय यहाँ कृषि की दशा भी अच्छी नहीं थी। उसके औद्योगिक नगर मित्र राष्ट्रों ने छिन लिए थे और समस्त ज़र्मन व्यापार नष्ट हो गया था। अतः सारे जर्मनी में अव्यवस्था एवं असंतोष का वातावरण मौजूद था जिसने हिटलर के उदय की पृष्ठभूमि का निर्माण किया।

4. क्षतिपूर्ति की कठोर शर्तें :

प्रथम विश्व युद्ध के बाद क्षतिपूर्ति के रूप में जर्मनी से वसूल किये जाने वाली राशि 6 अरब 10 करोड़ पौंड निश्चित की गई थी। परन्तु इतनी बड़ी राशि का भुगतान करना जर्मनी के लिए असंभव था। इधर मित्र राष्ट्रों द्वारा भुगतान के लिए हमेशा दबाव बनाया जाता रहा जो व्यवहारिक कदम नहीं था।

5. साम्यवाद का बढ़ता संकट :

1917 की रूसी क्रांति का प्रभाव जर्मनी पर पड़ा। यहाँ भी साम्यवादी संगठनों का निर्माण हुआ। साम्यवादियों ने वाइमर गणतंत्र को उखाड़ने एवं सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद लाने का प्रयास किया। अतः जर्मनी का उद्योगपति, पूँजीपति एवं जमींदार वर्ग काफी भयभीत हो गया। इस प्रकार, हिटलर ने साम्यवाद विरोधी नारा देकर समाज के धनी वर्गो की सहानुभूति भी अपने पक्ष में कर लिया।

अतः कहा जा सकता है कि प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी की तात्कालिक स्थिति काफी दयनीय थी। चारो ओर निराशा एवं अराजकता का वातावरण था। जर्मन जनता वैकल्पिक नेतृत्व के बारे में सोच ही रही थी कि उसे हिटलर जैसा तेजस्वी नेता मिला जिसकी आवाज में जादू था और जिसके करिश्माई व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण तो था ही। जर्मन जनता से उसने खुशहाली का वादा किया तथा राष्ट्र के गौरव की पुनर्स्थापना का वचन दिया। जर्मन जनता उसके शब्दजाल में फँस कर अपना भविष्य उसके हाथों में सौंप दिया। इस प्रकार हिटलर के उदय की पृष्ठभूमि का निर्माण हुआ।

हिटलर एवं उसके कार्य

एडोल्फ हिटलर का जन्म 20 अप्रैल, 1889 ई० को आस्ट्रिया के ब्रौना नामक शहर में एक साधारण परिवार में हुआ था। उसका लालन-पालन सही तरह से नहीं हो सका। बचपन में वह चित्रकार बनना चाहता था परन्तु उसकी इच्छा पूरी नहीं हो सकी। अंततः उसने सेना में नौकरी कर ली। प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) में वह जर्मनी की तरफ से लड़ा था और युद्ध में अभूतपूर्व वीरता के लिए उसे 'आयरन क्रास' प्राप्त हुआ था। परन्तु जर्मनी द्वारा विराम संधि पर हस्ताक्षर करने से उसे भारी निराशा हुई। युद्ध के बाद वह 'जर्मन वर्कर्स पार्टी' का सदस्य बना। 1920 ई० में इस पार्टी का नाम बदलकर 'नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी' रखा गया। धीरे-धीरे हिटलर इसका फ्यूहरर (नेता) बन गया।

एडोल्फ हिटलर

हिटलर ने अपने चारो तरफ रूडोल्फ और गोबल्स जैसे हंगामा करने वालों को इकट्ठा किया। जिसकी नीति थी–'अफवाह को इतना फैला दो कि वह सत्य प्रतीत होने लगे।' प्रथम विश्व युद्ध के बाद संधि के तहत जर्मन प्रदेश रूर पर फ्रांस का कब्जा हो गया। जर्मन प्रदेश 'रूर' औद्योगिक रूप से काफी संपन्न था। अत: जर्मन वासियों ने फ्रांसीसी आधिपत्य का विरोध किया। हिटलर मौके के तलाश में था एवं उसने जनाक्रोश का लाभ उठाकर लूडेनर्डाफ के साथ मिलकर 1923 ई० में वाइमर गणतंत्र के खिलाफ विद्रोह कर दिया। विद्रोह असफल हुआ एवं हिटलर को बंदी बना लिया गया। जेल में ही हिटलर ने अपनी प्रसिद्ध आत्मकथा 'मीनकैम्फ' की रचना की जिसमें उसने भावी कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की है। 1924 ई० के अंत में उसे रिहा कर दिया गया। रिहा होकर उसने अपने दल को नये सिरे से संगठित किया। आर्यों की पवित्रता के सूचक 'स्वास्तिक' को प्रतीक के रूप में ग्रहण किया तथा सैनिक ढंग से पार्टी को संगठित किया। हालांकि नाजी पार्टी के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए 'स्टेसमान' के नेतृत्व में गणतंत्रवादियों ने कई कार्यक्रम शुरू किए। 1925 ई० के लोकार्नो समझौते ने जर्मनी को वैश्विक समुदाय में सम्मान जनक स्थान प्रदान किया जर्मनी को राष्ट्रसंघ की सदस्यता मिल गई। 1924 ई० में जर्मनी के निम्न सदन 'राइखस्टैग' के चुनाव में नाजी पार्टी को 32 स्थान मिले थे वहीं 1928 के चुनाव में घटकर 12 हो गया। इस प्रकार नाजी पार्टी एवं हिटलर का प्रभाव जर्मनी में कम होने लगा। परन्तु हिटलर ने हिम्मत नहीं हारा। इसी समय 1929 ई० में प्रारंभ हुए विश्व आर्थिक मंदी तो हिटलर के लिए नवजीवन का संदेश लेकर आया। विश्व आर्थिक मंदी से सर्वाधिक प्रभावित जर्मनी हुआ था। अब वाइमर गणतंत्र से जर्मन जनता का विश्वास उठने लगा था। हिटलर ने इस परिस्थिति का भरपूर लाभ उठाया और वाइमर गणतंत्र, वर्साय संधि एवं यहूदियों के खिलाफ आग उगलना आरंभ कर दिया तथा उन्हें जर्मनी की वर्तमान दुर्दशा के लिए जिम्मेवार ठहराया। उसने मध्यवर्ग और बेकार नौजवानों को अपना प्रबल समर्थक बना लिया तथा साम्यवाद का हौवा खड़ा कर बड़े-बड़े उद्योगपतियों को भी अपना समर्थक बना लिया। अब नाजी पार्टी की शक्ति में दिन-दूना रात चौगुना वृद्धि होने लगी। 1930 ई० के चुनाव में उसे 107 सीटें मिली तथा 1932 ई० के चुनाव में 230 सीटें प्राप्त की परन्तु उसे सरकार बनाने का मौका नहीं मिला। बाद में राष्ट्रपति हिंडेनवर्ग ने 30 जनवरी 1933 को हिटलर को चांसलर मनोनीत किया। फलत: उसने निरंकुश अधिकार प्राप्त किया। सत्ता प्राप्त करते हो उसने चुनाव कराने की घोषणा की तथा चुनाव प्रणाली का संगठन इस तरह से किया कि नाजी पार्टी के लोग ही चुनाव जीत कर आ सकते थे। इस प्रकार जर्मन गणतंत्र की समाप्ति हुई और नात्सी क्रांति की शुरूआत हुई, जिसे हिटलर ने 'तृतीय राइख' का नाम दिया। अगस्त 1934 में हिंडेनवर्ग की मृत्यु होने पर चांसलर और राष्ट्रपति के पद को मिलाकर एक कर दिया गया। अब हिटलर जर्मनी का सर्वेसर्वा बन गया तथा अब उसने नाजीवादी दर्शन एवं विदेश

नीति का अवलंबन किया जिसके कारण पूरे विश्व में तनाव के वातावरण का निर्माण हुआ तथा द्वितीय विश्व युद्ध नजदीक दिखाई पड़ने लगा।

नाजीवादी दर्शन

नाजी पार्टी का प्रतीक चिह्न

1. नाजीवाद में उदारवाद एवं लोकतंत्र का कट्टर विरोध की अवधारणा है। अतः हिटलर ने सत्ता प्राप्त करते ही प्रेस तथा वाक् अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया एवं विरोधी दलों का सफाया कर दिया। उसने शिक्षण संस्थाओं तथा जनसंचार पर भी प्रतिबंध लागू किया। इस प्रकार जर्मनी में लोकतांत्रिक आवाज को दफन करने का प्रयास हुआ जो राष्ट्र के लिए घातक सिद्ध हुआ।

2. यह दर्शन अंतर्राष्ट्रीय समाजवाद का भी प्रबल विरोधी है। हिटलर ने भी समाजवाद के विरुद्ध आवाज बुलंद किया तथा जर्मन पूँजीपतियों को अपनी ओर मिला लिया। हिटलर के इस कार्य को इंगलैण्ड एवं फ्रांस की ओर से भी अप्रत्यक्ष समर्थन मिला जिसके कारण उसका मनोबल बढ़ता गया। अंततः पूरा विश्व एक भयंकर युद्ध के नजदीक अपने को खड़ा पाया।

3. नाजीवादी दर्शन में सर्वसत्तावादी राज्य की संकल्पना है। अर्थात् इसके अनुसार राज्य के भीतर ही सब कुछ है, राज्य के बाहर एवं विरुद्ध कुछ नहीं है।

नात्सी शब्द जर्मन भाषा के शब्द 'नातिसयोणाल' के प्रारंभिक अक्षरों को लेकर बनाया गया है, 'नातिसयोणाल' शब्द हिटलर की पार्टी के नाम का पहला शब्द था इसलिए इस पार्टी के लोगों को नात्सी कहा जाता था।

4. यह दर्शन उग्र राष्ट्रवाद पर बल देता है। हिटलर ने सत्ता प्राप्त करते ही उग्र राष्ट्रवाद पर बल दिया है। चूँकि जर्मनी में प्रारंभ से ही उग्र राष्ट्रवाद एवं सैनिक तत्व की परंपरा रही है। अतः हिटलर ने जर्मनी के इस मनोवृति का लाभ उठाया तथा अपने आक्रामक वक्तव्यों के द्वारा पूरे जर्मन वासियों को अपमान का बदला लेने के लिए मानसिक स्तर पर तैयार कर दिया। अब पूरे जर्मनी में युद्ध का माहौल दिखाई पड़ने लगा।

5. नाजीवाद राजा की निरंकुश शक्ति पर बल प्रदान करता है। जर्मनी में हिटलर ने निरंकुश शक्ति का सहारा लिया। सत्ता में आते ही उसने गुप्तचर पुलिस 'गेस्टापों' का संगठन किया जिसका आतंक पूरे जर्मनी पर छा गया। उसने विशेष कारागृह की स्थापना की जिसके माध्यम से

राजनीतिक विरोधियों का दमन किया गया। राइखस्टाग की इमारत में हिटलर ने खुद आग लगवाई परन्तु उसका दोषारोपण समाजवादियों पर मढ़ दिया। इस प्रकार उनका राजनैतिक जीवन समाप्त कर दिया गया। अब जर्मनी में एक पार्टी थी–नाजी पार्टी एवं एक नेता था–हिटलर।

6. नाजीवादी दर्शन में सैनिक शक्ति एवं हिंसा को महिमामंडित किया जाता है।

इस प्रकार नाजीवादी दर्शन द्वारा जर्मनी में असंतोष का फायदा हिटलर ने उठाया। हालांकि उसने जर्मनी की आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए अथक प्रयास किया तथा देखते-ही-देखते जर्मनी, यूरोप की सबसे बड़ी औद्योगिक शक्ति बन गया। परन्तु हिटलर ने अपनी शक्ति का प्रयोग नकारात्मक दिशा में किया जो राष्ट्र के लिए खतरनाक एवं विरोधी बन गया। हालांकि राष्ट्रवादी होना देश के हित में है परन्तु उग्र राष्ट्रवाद की भावना भरकर जर्मन मनोवृति को पीछे की ओर मोड़ने का प्रयास किया गया जो शायद राष्ट्रहित में नहीं था। हिटलर ने जर्मनी में तानाशाही शासन की स्थापना की जिसके दूरगामी परिणाम सही नहीं हुए क्योंकि तब पूरा दुनिया स्वयं को द्वितीय विश्व युद्ध के नजदीक खड़ा पा रहा था।

नाजीवाद का प्रभाव :

1. यूरोप के अन्य देशों में स्वतंत्रता विरोधी भावनाओं को प्रोत्साहन मिला।
2. विश्व में शांति विरोधी वातावरण का निर्माण हुआ तथा राष्ट्रसंघ द्वारा प्रतिपादित सामूहिक सुरक्षा के सिद्धांत को आघात पहुँचा।
3. पूरे विश्व में साम्यवाद विरोधी आंदोलनों में तेजी आई।
4. यूरोप में तुष्टिकरण की नीति का प्रचलन हुआ।
5. द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) की शुरूआत हुई।

हिटलर की विदेश नीति

प्रथम विश्व युद्धोपरांत पराजित जर्मनी पर मित्र राष्ट्रों द्वारा वर्साय संधि की अपमानजनक शर्तें लाद दी गई थी। सैनिक एवं आर्थिक रूप से जर्मनी को पंगु बना दिया गया था। पूरे जर्मनी

में वाइमर गणतंत्र एवं मित्र राष्ट्रों के खिलाफ बदले की भावना प्रज्वलित हो रही थी। अतः हिटलर ने इस परिस्थिति का भरपूर फायदा उठाया एवं बड़ी सावधानी से विदेश नीति का अवलंबन किया। उसने विदेश नीति के मूल सिद्धांत थे–

1. वर्साय संधि को भंग करना।
2. सारी जर्मनी जाति को एक सूत्र में संगठित करना।
3. जर्मनी साम्राज्य का विस्तार करना।
4. साम्यवाद के प्रसार को रोकना।

इन सिद्धांतों की प्राप्ति के लिए उसने निम्नलिखित कदम उठाए :–

1. राष्ट्रसंघ से पृथक होना : हिटलर ने अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम 1933 में जेनेवा निःशस्त्रीकरण की शर्तें सभी राष्ट्रों पर समान रूप से लागू करने की माँग की परन्तु जब उसे सफलता नहीं मिली तो उसने जर्मन प्रतिनिधियों को वापस बुला लिया एवं 1933 में राष्ट्रसंघ की सदस्यता छोड़ने की घोषणा कर दी।

हिटलर की विदेश नीति :

- राष्ट्रसंघ से पृथक होना
- वर्साय संधि को भंग करना
- पोलैंड के साथ दस वर्षीय समझौता
- ब्रिटेन से समझौता
- रोम-बर्लिन धुरी
- कामिन्टर्न विरोधी समझौता
- आस्ट्रिया एवं चेकोस्लोवाकिया का विलय
- पोलैंड पर आक्रमण

2. वर्साय की संधि को भंग करना : 1935 में हिटलर ने वर्साय संधि की निःशस्त्रीकरण संबंधी सभी धाराओं को तोड़ने की घोषणा की एवं उसने पूरे जर्मनी में अनिवार्य सैनिक सेवा लागू कर दिया। उसने स्पष्ट शब्दों में यह कहा कि अब जर्मनी अपने को वर्साय संधि से मुक्त समझेगा।

3. पोलैंड के साथ दस वर्षीय समझौता : हिटलर ने 1934 में पोलैंड के साथ दस वर्षीय अनाक्रमण संधि की जिसके अनुसार यह तय हुआ कि वे एक दूसरे की वर्तमान सीमाओं का किसी भी प्रकार अतिक्रमण नहीं करेंगे।

4. ब्रिटेन से समझौता : जून 1935 में जर्मनी तथा ब्रिटेन में समझौता हो गया जिसके अनुसार ब्रिटेन ने स्वीकार कर लिया कि वह (जर्मनी) अपनी सैन्य शक्ति (स्थल तथा वायु सेना) बढ़ा सकता है, बशर्ते वह अपनी नौ सेना 35 प्रतिशत से अधिक न बढ़ाये। हिटलर की यह एक बड़ी कूटनीतिक विजय थी।

Concentration Camps

हिटलर के काल में जर्मनी

5. रोम-बर्लिन धुरी : हिटलर की आक्रामक नीति ने जर्मनी को अंतर्राष्ट्रीय बिरादरी से अलग कर दिया था। अतः मित्र की तलाश में हिटलर ने इटली की ओर हाथ बढ़ाया और इस प्रकार रोम-बर्लिन धुरी का निर्माण हुआ। इन दोनों मित्रों ने स्पेन के सैनिक शासक जेनरल फ्रैंको की भी मदद पहुँचाई।

6. कामिन्टर्न विरोधी समझौता : साम्यवादी खतरा से बचने के लिए जर्मनी, इटली एवं जापान के बीच कामिन्टर्न विरोधी समझौता 1936 ई० में संपन्न हुआ जो कालान्तर में धुरी राष्ट्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

7. आस्ट्रिया एवं चेकोस्लोवाकिया का विलयन : जर्मन भाषा-भाषी को एक सूत्र में बाँधना भी हिटलर की विदेश नीति का लक्ष्य था। अतः वह आस्ट्रिया को अपने साम्राज्य में मिलाना

चाहता था। प्रारंभ में इटली ने विरोध किया परन्तु अंततः आस्ट्रिया को जर्मन साम्राज्य में मिला लिया गया फलतः हिटलर का मनोबल काफी बढ़ गया।

चेकोस्लोवाकिया के सुडेटनलैंड में जर्मन जाति के लोग रहते थे, अतः हिटलर ने चेक सरकार से सुडेनटनलैंड की माँग की जिसे उसने अस्वीकार कर दिया। फलतः इंगलैण्ड, फ्रांस एवं इटली के अनुरोध पर 1938 के म्यूनिख सम्मेलन में सुडेटनलैंड जर्मनी को दे दिया गया। लेकिन हिटलर तो पूरे चेक गणराज्य को हस्तगत करना चाहता था, अतः उसने 1939 में ही समस्त चेक गणराज्य पर अधिकार कर लिया। इसके बाद उसने मेमेल बंदरगाह पर भी अधिकार कर लिया। परन्तु मित्र राष्ट्र मुक दर्शक की भूमिका में बने रहे जिससे हिटलर का मनोबल बढ़ता गया।

8. पोलैण्ड पर आक्रमण : पोलैण्ड के डान्जिंग बदंरगाह पर आक्रमण करना हिटलर का अगला लक्ष्य था। पोलैण्ड को बाल्टिक सागर तक पहुँचने के लिए जर्मनी का कुछ भूभाग दे दिया गया था, जिसे पोलिश गलियारा कहा जाता था। हिटलर ने डान्जिंग बंदरगाह तथा पोलिश गलियारे की माँग की एवं इसी प्रश्न पर जब उसने पोलैंड पर 1 सितम्बर 1939 को आक्रमण कर दिया तो फ्रांस, इंग्लैण्ड आदि ने हस्तक्षेप किया और इस प्रकार द्वितीय विश्व युद्ध (1939-1945) की शुरूआत हुई। इस युद्ध में हिटलर का तंत्र लड़खड़ा गया तथा प्रारंभ की आशातीत सफलता के बाद मित्र देशों की शक्ति के सामने जर्मनी पराजित होने लगा। 1945 में जब विजयी सेनाएँ बर्लिन पहुँची तब तक हिटलर अपने बंकर में आत्महत्या कर चुका था। इस प्रकार विश्व समुदाय को एक तानाशाह से मुक्ति मिली एवं वैश्विक शांति हेतु 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई ।

तालिका-1

वर्ष	सदस्य संख्या (नाजी पार्टी)
1924	32
1928	12
1930	107
1932	230

राइखस्टैग (निम्न सदन) में नाजी पार्टी की स्थिति

अभ्यास

I. वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. हिटलर का जन्म कहाँ हुआ था?
   (क) जर्मनी (ख) इटली
   (ग) जापान (घ) आस्ट्रिया
2. नाजी पार्टी का प्रतीक चिह्न क्या था?
   (क) लाल झंडा (ख) स्वास्तिक
   (ग). ब्लैक शर्ट (घ) कबूतर
3. 'मीनकैम्फ' किसकी रचना है।
   (क) मुसोलनी (ख) हिटलर
   (ग) हिण्डेनवर्ग (घ) स्ट्रेसमैन
4. जर्मनी का प्रमुख औद्योगिक क्षेत्र था।
   (क) आल्सस-लॉरेन (ख) रूर
   (ग) इवानोव (घ) बर्लिन
5. जर्मनी की मुद्रा का नाम क्या था।
   (क) डॉलर (ख) पौंड
   (ग) मार्क (घ) रूबल

II. सही कथनों का चुनाव करें :

1. हिटलर लोकतंत्र का समर्थक नहीं था।
2. नाजीवादी कार्यक्रम यहूदी समर्थक था।
3. नाजीवाद में निरंकुश सरकार का प्रावधान था।
4. वर्साय संधि में हिटलर के उत्कर्ष के बीज निहित थे।
5. नाजीवाद में सैनिक शक्ति एवं हिंसा को गौरवान्वित किया जाता है।

III. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें :

1. हिटलर का जन्म..................ई० में हुआ था।
2. हिटलर जर्मनी के चांसलर का पद..................ई० में संभाला था।
3. जर्मनी ने राष्ट्रसंघ से संबंध विच्छेद..................ई० में किया था।

4. नाजीवाद का प्रवर्त्तक.........................था।

5. जर्मनी के निम्न सदन को.........................कहा जाता था।

IV. 20 शब्दों में उत्तर दें :

1. तानाशाह
2. वर्साय संधि
3. तुष्टिकरण की नीति
4. वाइमर गणराज्य
5. साम्यवाद
6. तृतीय राइख

V. सही मिलान करें :

1. गेस्टापो	(क) जर्मनी का शहर
2. वाइमर	(ख) यहूदियों के प्रार्थनागृह
3. सिनेगॉंव	(ग) गुप्तचर पुलिस
4. ब्राउन शर्टस	(घ) निजी सेना
5. हिंडेनबर्ग	(ङ) जर्मनी राष्ट्रपति

VI. लघु उत्तरीय प्रश्न :

1. वर्साय संधि ने हिटलर के उदय की पृष्ठभूमि तैयार की कैसे?
2. वाइमर गणतंत्र नाजीवाद के उदय में सहायक बना कैसे?
3. नाजीवाद कार्यक्रम ने द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार की कैसे?
4. क्या साम्यवाद के भय ने जर्मन पूँजीपतियों को हिटलर का समर्थक बनाया ?
5. रोम-बर्लिन टोकियो धुरी क्या है?

VII. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. हिटलर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालें।
2. हिटलर की विदेश नीति जर्मनी की खोई प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एक साधन था। कैसे?
3. नाजीवादी दर्शन निरंकुशता का समर्थक एवं लोकतंत्र का विरोधी था। विवेचना कीजिए।